आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 332 | ARYA SABHA MAURITIUS | *26th Apr. to 12th May 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Une prière importante ayant deux buts spécifiques :-

1er But

Pour nous débarrasser de nos mauvaises habitudes, vices, mauvais penchants, malheurs, etc.

2ème But

Pour que Dieu nous bénisse en nous accordant la vertu, les attitudes positives, la désir de faire des actions nobles, de développer nos potentiels et de nous munir de toutes les ressources nécessaires afin de rendre notre vie heureuse, confortable et bien réussie.

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।

यजु० ३०/३

Om ! Vishwāni Deva Savitar Duritāni Parāsuva.
Yadbhadram Tanna Āsuva.

Yajur Véda 30/3

La signification des mots

Om – Dieu/Seigneur, **Savitah** – Le Créateur de l'univers et la source de la prospérité, **Deva** - Dieu, tout resplendissant de lumière spirituelle, qui transmet le bonheur et la joie dans la vie de tous, **Nah** – notre, **Vishwāni** – tout, **Duritāni** – mauvaises habitudes, vices, défauts et calamités/malheurs, **Parā Suva** - débarrasser, détruire, éliminer, **Yat** – ce qui, **Bhadram** – bonnes manières, toutes les vertus, les bonnes actions, **Tat** – ce, **Āsuva** – accordez-nous.

Interprétation

O Seigneur ! Tu es le Créateur de l'univers le générateur de la prospérité, la source de la lumière spirituelle et de connaissances (le savoir). C'est toi qui nous transmets le bonheur et la joie.

Nous te prions de tout notre cœur et très humblement de nous débarrasser de toutes nos mauvaises habitudes, défaut, vices, mauvais penchants et malheurs, et de nous munir de la vertu, les bonnes manières, les attitudes positives, le désir de faire de bonnes actions, de développer tous nos potentiels et de nous procurer des ressources nécessaires afin de nous permettre de mener une vie décente, disciplinée et remplie de bonheur et de prospérité.

N. Ghoorah

मार लाशो में नव दिवसीय गायत्री महायज्ञ

सम्पादकीय टिप्पणी : *गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान सर्वप्रथम सन् १९५० के दशक में महात्मा आनन्द भिक्षु द्वारा इस देश में हुआ था। अनेक धर्म-प्रेमी भाई-बहनों ने महात्मा जी के यज्ञ से प्रभावित होकर गायत्री-यज्ञ सम्पन्न करना प्रारम्भ किया। बीते वर्षों में अनेक स्थानों पर गायत्री यज्ञानुष्ठान होता रहा। श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण जी ने अपने सहयोगियों को प्रभावित करके अपने ग्राम में नौ दिवसीय यज्ञ सम्पन्न करते हुए एक ऐतिहासिक कार्य किया है। उन्हें हम आर्य सभा की ओर से कोटिशः धन्यवाद समर्पण करते हैं। इस वृहद् यज्ञ का विशेष विवरण पाठकों की सेवा में पंडिता प्रेमदा लीलकंठ, शास्त्री जी प्रस्तुत कर रही है ।*

डॉ० उदय नारायण गंगू

फ़्लाक प्रान्त के छोटे से गाँव मार लाशो में माता धनवन्ती रामचरण जी की प्रेरणा से नव दिवसीय गायत्री महायज्ञ का आनुष्ठान किया गया।

महायज्ञ प्रातः-सायं ९ अप्रैल से १७ अप्रैल तक होता रहा। आर्य सभा मॉरीशस और फ़्लाक आर्य ज़िला परिषद् का पूर्ण रूप से सहयोग रहा। फ़्लाक प्रान्त के सभी शाखा-समाजों और सभी दान-दाताओं ने तन-मन और धन से इस गायत्री महायज्ञ में भाग

लिया। मार लाशो गाँव के सभी समाजों ने भी पूर्ण रूप से सहयोग दिया । फ़्लाक प्रान्त के सभी पंडित और पंडिताओं ने इस गायत्री महायज्ञ की शोभा बढ़ाई।

यज्ञ की तैयारी में बहुत परिश्रम करना पड़ा। इसके आयोजन में बैठक लगाना, सही जगह का चयन करना, दिन और तारीख निर्धारित करना, समाजों के सदस्यों से सहयोग माँगना, सभी शाखा-समाजों से मिलना, पण्डाल बनाना, यज्ञ-वेदी बनाना, रात्रि में देर तक पंडाल और यज्ञ-वेदी की सजावट करना पड़ा। लेकिन खुशी इस बात की है कि सभी ने अपना पूरा-पूरा योगदान दिया।

पंडित शिवशंकर रामखेलावन जी, पंडिता सत्यभामा दोमन जी, माता धनवन्ती रामचरण जी मुख्य पुरोहित-पुरोहिता रहे। पंडित सुखनाथ जी, पंडित रामडू जी, पंडित तूलवा जी, पंडित रामसरण जी, पंडिता धुरन्धर जी, पंडिता देबिया जी, पंडिता लीलकंठ जी, पंडिता बुझावन जी, पंडिता दुखन जी पुरोहित-पुरोहिता बने। बारी-बारी से सबके सन्देश होते रहे।

यज्ञानुष्ठान प्रतिदिन हुआ – दो सत्रों में सुबह में ९.०० बजे से १२.०० बजे तक और शाम में ३.३० बजे से ६.०० बजे तक। यज्ञ-सम्पन्न कुछ इस प्रकार से हुआ – ९ अप्रैल को सुबह के ९.०० बजे झण्डारोहण विधि हुई । पंडित-पंडिता गण मन्त्र पढ़ रहे थे और मुख्य यजमानों द्वारा झण्डे को लहराया गया। यज्ञोपवीत धारण कर यजमानों ने यज्ञ का प्रारम्भ किया। पहले सत्र में पूरा स्वस्तिवाचन्, शान्तिकरण के साथ अग्निहोत्र और १०८ बार अर्थात् एक माला के हिसाब से गायत्री-मन्त्र से आहुतियाँ दी गईं। बारह यजमान थे। कुल १२९६ आहुतियाँ दी गईं। मुख्य पंडित शिवशंकर रामखेलावन जी और पंडिता दोमन जी थे। इस अवसर पर माननीय श्री राजेश्वर दयाल जी पधारे थे। साथ में एम.बी.सी. के कर्मचारी भी। माननीय दयाल जी का 'पर्यावरण की शुद्धि और यज्ञ के महत्त्व' पर सुन्दर भाषण हुआ।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

पर्यावरण की शुद्धता

परमात्मा ने हमें जीवित रहने के लिए शुद्ध वायु, पवित्र जल, तेज़ अग्नि के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के आहार प्रदान किए हैं। हम शुद्ध वायु का सेवन करके, जल पीकर तथा अग्नि से गरमी और ऊर्जा शक्ति प्राप्त करके प्राणों की रक्षा करते हैं। संतुलित भोजन पाकर अपने शारीरिक बल को बढ़ाते हैं। स्वस्थ स्फूर्तिला और आनन्दित रहने के लिए शुद्ध जल वायु और प्राकृतिक सौंदर्य का लाभ उठाते हैं। हमारा यह परम कर्त्तव्य है कि हम सभी लोग अपने देश के पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखें।

हम जिस देश की भूमि पर जी रहे हैं, उस देश के पर्यावरण की सुरक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। उसकी रमणिकता बनाए रखना हमारा उत्तरदायित्व है, ताकि सर्वत्र मनमोहक वातावरण पैदा हो और सभी प्राणियों को मंगलमय जीवन व्यतीत करने का भाग्य प्राप्त हो सके। जैसा पर्यावरण हम क़ायम करते हैं, वैसा ही हमारा जीवनकाल गुज़रता जाता है। शुद्ध वातावरण में पलकर ही इन्सान सुखी, आनन्दित और प्रसन्नचित्त रहता है। अतः पर्यावरण का संरक्षण करना प्रत्येक नागरिक का परम धर्म है।

आज मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान के बल पर विश्व को बड़ा ही रोचक, आकर्षक और मनमोहक बना दिया है। हमने अपने बौद्धिक बल एवं अनुभव द्वारा संसार का रूप ही बदल दिया है, भूलोक को परिवर्तित कर दिया है। गाँवों, देहातों और शहरों को अति सुन्दर बना दिया है। अपनी सुविधाओं के लिए कई नवीनतम साधन उपलब्ध करते जा रहे हैं ताकि जिन्दगी का सफ़र सुगमता पूर्वक गुज़रता जाए। वास्तव में हर एक व्यक्ति भौतिक सुख का भोग करना चाहता है।

खेद इस बात का है कि चन्द नादान व्यक्ति अपनी सुविधा के लिए अपने पास-पड़ोस का पर्यावरण दूषित करते जा रहे हैं। इसके दुष्परिणाम को समझे बिना नाले, नदी किनारे और सड़क किनारे मैले-कुचैले, सड़े पदार्थों को फेंककर देश के पर्यावरण को खराब कर रहे हैं। जिन कारणों से हमारे देश की सुन्दरता और स्वच्छता घटती जा रही है। हम उस अशुद्ध वातावरण में पल कर अनेक रोगों के शिकार हो रहे हैं। चारों तरफ़ प्रदूषण फैलाकर अपनी ही हानि पहुँचाने में लगे हैं। क्या यह हमारी मूर्खता नहीं ?

आज संसार में प्रदूषित पर्यावरण की एक गंभीर समस्या बनी हुई है। इस खतरे से बचने के लिए सभी सरकारें पूरी कोशिश कर रही है। हमारे वन, उपवनों, समुद्रतटों, नदी-नालों और अन्तरिक्ष को पवित्र रखने के साधन ढूँढे जा रहे हैं, फिर भी जल, थल और नभ के वाहनों से वायु प्रदूषित होती जा रही है, हमें शुद्ध वायु का सेवन करने में कठिनाई हो रही ही है। गैस, धुएँ, युद्ध तोपों आदि से वायुमण्डल खराब होता जा रहा है। उधर पृथ्वी का तापमान भी बिगड़ रहा है, जिन कारणों से सभी प्राणियों का भविष्य खतरे में है। ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा हम स्वयं अपनी क्षति पहुँचाने में लगे हैं। यह देखा जा रहा है कि हमारे किसान कई प्रकार के रासायनिक तथा कीटनाशक दवाइयों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग करके शुद्ध और पौष्टिक आहारों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। हम प्लेस्टिक के डिब्बे, बोतलें, बोरियाँ आदि इस्तेमाल करके इधर-उधर फेंककर अपने देश के आकर्षक दृश्य बिगाड़ रहे हैं। जंगलों को काटकर हरियाली समाप्त कर रहे हैं। औद्योगिक मशीनों, असहनीय नादों और बाहनों के शोरों से हमारा

पर्यावरण हमारे लिए घातक बन गया है। हमारी सरकार तो पर्यावरण की शुद्धता निमित्त वृक्षारोपण तथा सामुद्रिक तटों की सफ़ाई और गाँवों और शहरों की स्वच्छता आदि पर पूरा ध्यान दे रही है। हमें भी अपनी जीवन शैली शीघ्र ही बदल देनी चाहिए । अन्यथा हम स्वयं अपने शत्रु बनकर अपना सर्वनाश करेंगे। अब भी देर नहीं । हमारे देश का हर एक नागरिक पर्यावरण के संरक्षण पर पूरा ध्यान देगा तो हम इस रमणीक देश के सौंदर्य से हर्षित रहेंगे और विदेशियों को आकर्षित करेंगे।

बालचन्द तानाकूर

रामकृत जगेसर - एक सफल व्यक्ति

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

हिन्द महासागर का एक छोटा द्वीप मोरिशस; पहली बस्ती बनी डचों द्वारा १७ वीं शताब्दी में कुछ बीमार लोग, कुछ नाविक और मुट्ठी भर उपनिवेश बनाने वाले लोग थे। इससे पहले यहाँ दोदो पक्षी के अलावा कुछ जल में रहने वाले कछुवे थे। अठारह वीं शताब्दी के दूसरे- तीसरे दशक में फ़्राँसीसी लोग बस्ती बनाने लगे। तो पहले अफ़्रीका और मदागास्कार से ग़ुलाम खरीदकर.... लाए। थोड़े समय बाद दक्षिण भारतीय लोगों को लाया गया।

अंग्रेज़ों के समय में हमारे पूर्वजों को ईख के खेत में काम करने के लिए लाया गया। लेकिन शुरू-शुरू में बहुत कम लोगों को लाया गया। १८५७ के स्वधर्म-स्वराज्य की लड़ाई के बाद बहुसंख्या में भारतीयों को लाना आरम्भ हुआ। उसी समय १८६० के वर्षों में मनोगी नाम का शर्तबन्ध मज़दूर आये। उनका बेटा हुआ जगेसर रोपन जिनके तीन पुत्र और पाँच पुत्रियाँ हुईं। मोतीलाल, रामलाल और रामरूप ये तीन पुत्र थे। रामलाल का एक ही पुत्र हुआ और नाम रखा गया रामकृत। इस परिवार को रामायण याने तुलसीकृत रामचरित मानस से बहुत लगाव था। रामचरितमानस ही गरीब दुखी मज़दूरों को जीने के लिए एक मात्र सहारा था।

रामकृत का जन्म २९ दिसम्बर १९१२ में हुआ था। और मृत्यु ७२ वर्ष की आयु में १६.०१.१९८४ में हुई। आपका परिवार निरामिष भोजी था। आपके पूज्य दादा जी जगेसर रूपन साँझ को हस्तलिखित रामायण के दोहे-चौपाइयों का सस्वर पाठ करते थे और परिवार के छोटे बड़े सभी सदस्य नीचे चटाई पर बैठकर उन्हें ध्यान पूर्वक सुनते थे, और कभी साथ बैठकर गाते भी थे। रामकृत अपने चचेरे भाइयों और बहनों सहित दादा जी के मुखारविन से श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण व सीता माता की कथा सुनते। दादा जी जगेसर अपनी टूटी-फूटी हिन्दी भाषा में भोजपुरी मिलाकर समझाते, फिर भी बच्चे समझने की स्थिति में नहीं होते। पर राम-सीता के प्रति बेशुमार श्रद्धा थी। यही थी आप की प्रारम्भिक शिक्षा। धर्म, कर्म, संस्कृति सब रामचिरतमानस पर ही आधारित था।

आपके दादा, जगेसर साधु, गाँव के लोगों में बहुत प्रसिद्ध हो गये थे। वे केवल नाम के साधु नहीं थे बल्कि सच्चे अर्थ में साधु थे। गरीबी के कारण जगेसर साधु अपनी पाँच पुत्रियों को तो प्राथमिक स्कूल नहीं भेज सके और न अपने ज्येष्ठ पुत्र मोतीलाल को। उस अन्धकार पूर्ण ज़माने में बड़े पुत्र माँ-बाप की सहायता करने के लिए रह जाते थे। बहुत से परिवारों में यह बात होती थी। बाद के बच्चे याने भाई-बहनों को देखना क्योंकि अगर बाप खेतों में काम करते थे तो माँ मौसी पालती थी, परिवार के भरण-पोषण के लिए। मंजला पुत्र रामलाल, रामकृत के पूज्य पिता जी, प्राथमिक स्कूल में अंग्रेज़ी, व फ्रेंच आदि पढ़ पाए थे।

मोतीलाल के यहाँ एक ही पुत्र रत्न पैदा हुआ जिसका नाम रखा गया सुदर्शन जो आगे चलकर खूब पढ़-लिखकर पी.एच.डी. बन गए और बाद में प्रोफ़ेसर बनें। रामलाल के दूसरे पुत्र का नाम रखा गया रामकृत और रामकृत के छः पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। रामकृत आपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। इस कारण बहुत लाड़ प्यार से इनका पालन पोषण होता रहा। अभी दो ही वर्ष के हो पाये थे कि माँ का साया सिर से उठ गया।

एक मात्र नन्हे मुन्ने रामकृत की देख-भाल करने के लिए रामलाल ने दूसरी शादी कर ली। परन्तु वह भी विधाता को नहीं भाया, उसे भी बुला लिया। अब कोई चारा नहीं था। तीसरा विवाह किया रामलाल ने, और उस देवी ने जीवन भर परिवार और विशेष कर रामकृत की दिलोजान से सेवा सुश्रुषा की ।

पाँच वर्ष की अवस्था में बोनाकेई की ईसाई पाठशाला में बालक रामकृत की प्राथमिक शिक्षा आरम्भ हुई। बालक रामकृत कुशाग्रह बुद्धिवाला था। मन लगाकर पढ़ता। अध्यापक ऐसे ही बालक को पसन्द करते हैं। पढ़ाते तो सभी बच्चों को बराबर, पर आज्ञाकारी व मेधावी बच्चों पर अध्यापक की कृपा अधिक रहती है। रामकृत हर वर्ष परीक्षा में अव्वल आते। हिन्दू परिवार में उस ज़माने में एक भय बना रहता और खास कर मेधावी बच्चों पर कृश्चन पादरियों की दृष्टि टीकी रहती। हर वक्त किसी न किसी प्रकार का लालच दिखाकर वे हिन्दू बच्चों को अपने धर्म में दीक्षित करने की ताक में रहते थे। इसलिए जब रामकृत कृश्चन इमदादी स्कूल में पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण कर चुके तो बोनाकेई की पाठशाला से उन्हें निकालकर सें जुलियें रीतू स्कूल में दाखिल करा दिया गया। यह स्कूल सें ज़ुलियें विलेज में स्थित श्री देवीदीन रीतू जी द्वारा बनाई गयी थी। यहाँ रीतू जी के सम्बन्ध में कुछ बता देना अनुचित न होगा। देबीदीन जी अपने ज़माने के बहुत बड़े समाज के हित चिंतक थे जैसे मोरिशस के इतिहासिक में दक्षिण प्रान्त में दुखी गंगा जी थे। जैसे आर्यसमाज शिक्षा के लिए प्रख्यात था वैसे ही सीमित पैमाने में देबीदीन जी थे। वे दानी देबीदीन के नाम से जाने जाते थे। देबीदीन की पाठशाला का भग्नावशेष अभी तक गाँव में दिखाई देता है। उसी स्कूल में श्री वासुदेव विष्णुदयाल ने वर्षों अध्यादन तक कार्य किया था। वहीं पर उन्होंने किराए में एक कमरा ले रखा था। वह कमरा रात्रि में शयनकक्ष के रूप में इस्तेमाल होता और शाम में स्कूल के रूप में तब्दिल हो जाता था। विष्णुदयाल जी उन दिनों पोर्ट लुईस रहते थे। उन दिनों सवारी के साधन की कमी तो थी ही और दूरी भी कुछ कम नहीं थी। सप्ताहान्त में ट्रेन द्वारा वापस होते और सोमवार को तड़के सुबह फ्लाक आ जाते और फिर सें जुलियें पहुँच जाते। आज जैसे कभी नहीं कहते कि सवारी न मिलने के कारण देर हो गयी। जीवन में संयम का महत्व जानते थे। काम उनके लिए पूजा के समान था।

रामलाल का एक सपना था कि रामकृत परिवार का एक चिराग़ बने। जो सपना सोते वक्त रात्रि में देखते हैं वह आँखें खुलने पर लुप्त हो जाता है जैसे सूर्योदय के बाद आसमान के तारे लुप्त हो जाते हैं। पर जो सपना जागृत अवस्था में देखते हैं जो आदमी को सोने नहीं देता वही सपना साकार होता है। सचमुच रामलाल का सपना साकार हुआ।

क्रमशः

पृष्ठ १ का शेष भाग

दूसरा सत्र शाम के ३.३० बजे प्रारम्भ होकर ६.३० बजे समाप्त हुआ। इज़ीदोरोज समाज से १२ यजमान उपस्थित थे। उन्होंने सब लोगों के लिए भोजन का प्रबन्ध भी किया था। मुख्य पंडित सुखनाथ और पंडिता लीलकंठ जी रहे। अग्निहोत्र के बाद दो मालाओं के हिसाब से २१६ बार गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ दी गईं। कुल २५९२ आहुतियाँ दी गईं। सभा के मन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी का मुख्य सन्देश रहा। अन्य महानुभाव भी आये थे। वाक्वा आर्यसमाज की भजन-मण्डली ने सुन्दर भजन से कार्य की शोभा बढ़ाई।

१० अप्रैल को पोस्त दे फ़्लाक आर्यसमाज के १८ यजमानों ने अपनी उपस्थिति दी। भोजन तथा भजन मण्डली का प्रबन्ध भी साथ में था। यज्ञ पुरोहित पंडित तूलवा और पंडित रामखेलावन जी रहे। यज्ञानुष्ठान बराबर हुआ अर्थात् अग्निहोत्र के बाद २१६ बार गायत्री मन्त्र का पाठ और ३८८८ आहुतियाँ दी गईं।

बारी-बारी से लघु सन्देश दिये गये। मण्डली की ओर से सुन्दर भजन गाये गये ।

दूसरे सत्र में स्थानीय सिनियोर सिटिज़ेन के सदस्यों ने ११ यजमानों के साथ यज्ञ में भाग लिया। भोजन का प्रबन्ध भी इन्होंने ही किया था। मुख्य पुरोहित पंडित जानकी जी और माता धनवन्ती रामचरण जी थे। सुन्दर रूप में यज्ञ सम्पन्न हुआ। २३७६ गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ दी गईं। पंडित जानकी जी ने गायत्री के महत्त्व पर सन्देश दिया और कार्यकर्ताओं को धन्यवाद किया; मुख्य प्रवचन आचार्य ब्रह्मदेव मकूनलाल जी का रहा। उन्होंने गायत्री मन्त्र का अर्थ 'पूजनीय प्रभु....' प्रार्थना के माध्यम से जोड़कर सुन्दर व्याख्यान दिया।

११ अप्रैल को त्रु-दो-दुस आर्य समाज का पूरा सहयोग रहा। १३ यजमान, सहभोज के साथ बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। मुख्य पुरोहित पंडित सुखनाथ और पंडित रामखेलावन जी रहे। दोनों पंडितों द्वारा गायत्री की महिमा पर सन्देश हुए। बराबर अग्नि होत्र के बाद २१६ बार गायत्री मन्त्रों का पाठ हुआ और २८०८ आहुतियाँ दी गईं।

शाम को काँ-इचये समाज ने भी अपना योगदान दिया। १२ यजमानों के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ। मुख्य पुरोहित पंडित सुखनाथ और पंडिता बुझावन जी रहे। आर्य महिला समाज द्वारा भजन और मुख्य सन्देश पंडितों द्वारा २५९२ आहुतियाँ दी गईं।

१२ अप्रैल को तीन समाजों का सहयोग रहा। शान्ति नगर, पालमॉर और कात-कोको के लोग उपस्थित हुए। १२ यजमानों ने यज्ञ सम्पन्न किया। दो मालाओं से गायत्री मन्त्र के साथ २५९२ आहुतियाँ दी गईं। पंडिता धुरन्धर और पंडिता लीलकंठ मुख्य पुरोहित रहे। सन्देश पंडिता धुरन्धर जी का रहा। भजन मार लाशो आर्य महिला समाज की ओर से रहा।

शाम के सत्र में दूर गाँव पों प्रालें आर्यसमाज से १० यजमानों ने भोजन के साथ अपनी उपस्थिति दी। बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ यजमानों ने अपनी आहुतियाँ अर्पित कीं। गायत्री मन्त्र से २१६० आहुतियाँ दी गईं। मुख्य पुरोहित पंडित रामदू जी थे। मुख्य सन्देश का वक्ता पंडित यशवन्तलाल चुरामणी जी थे, जिन्होंने सुन्दर भाषण से सब का मन मोह लिया। भजन भी पंडित जी की सुपुत्री ने मधुर वाणी से गाया। साथ में पंडित रामदू जी का भी लघु सन्देश रहा ।

१३ अप्रैल को एक्राँयॉर आर्यसमाज का सहयोग रहा । १६ यजमानों के साथ यज्ञ-कार्य सम्पन्न हुआ अर्थात् गायत्री मन्त्रों से ३४५६ आहुतियाँ अर्पित की गईं। पंडित रामशरण जी, पंडिता बुझावन जी मुख्य पुरोहित रहे। मुख्य सन्देश पंडित रामशरण जी का रहा। आज पण्डाल भरा है दूर-दूर से भक्त-गण पहुँचे हुए है। भजन-मण्डली श्री हिमेश जी निरघीन भवन के शिष्यों के साथ आये हुए थे। सुन्दर भजनों से सब के मन को प्रभावित किया। श्रीमती यालीनी यालापा, श्रीमती पूछवा आदि सब उपस्थित थीं। स्वामी लाछो शिवशंकर भी उपस्थित थीं।

शाम को कारोलिन आर्यसमाज का सहयोग रहा, भोजन का भी प्रबन्ध किया और यजमान का भी। १६ यजमानों ने भाग लिया। मुख्य पुरोहित पंडित सुखनाथ जी और पंडिता लीलकंठ जी रहे । स्थानीय भजन मण्डली ने अपना पूरा योगदान दिया। पंडितों तथा पंडिताओं के सन्देश भी हुए। इस सत्र में १६ यजमानों ने २१६ बार गायत्री मन्त्र से ३६७२ आहुतियाँ दीं।

१४ अप्रैल को क्विन विक्टोरिया आर्यसमाज ने पूरे तन-मन-धन से इस गायत्री महायज्ञ में भाग लिया। मुख्य पुरोहित पंडित रामखेलावन जी और पंडिता लीलकंठ जी थे। अग्निहोत्र के बाद गायत्री मन्त्र से कुल ३०२४ आहुतियाँ अर्पित की गईं।

इस शुभ अवसर पर आर्य सभा के प्रधान डॉक्टर उदयनारायण गंगू जी ने अपने शिष्यों के साथ अपनी उपस्थिति दी। बारी-बारी से निर्धारित पंडित-पंडिताओं के लघु सन्देश और भजन भी हुए। मुख्य सन्देश डॉक्टर गंगू जी का था। इस अवसर पर पंडित खेदू जी गुरुकुल के बच्चों के साथ आये थे। बच्चों ने सुन्दर श्लोक पाठ भी किया।

शाम को बोनमेर आर्यसमाज का सहयोग रहा। १७ यजमान श्रद्धा और भक्ति-भाव से आहुतियाँ अर्पित कर कार्य की शोभा बढ़ाई । मुख्य पुरोहित-पुरोहिता थे पंडित रामदू जी और पंडिता लीलकंठ जी। आचार्य ब्रह्मदेव मकूनलाल जी भी उपस्थित थे। पंडित रामदू जी के साथ-साथ इनका भी सन्देश रहा। पाय आर्यसमाज से भजन मण्डली ने कार्य में चार-चान्द लगा दिये। उस सत्र में ३६७२ आहुतियाँ दी गईं।

१५ अप्रैल को सेंत क्रोआ से आर्यसमाज से १४ यजमान पधारे और सही समय पर यज्ञ सम्पन्न हुआ । पंडित सुखनाथ और माता रामचरण जी मुख्य पुरोहित थे। अग्नि-होत्र के साथ ३०२४ आहुतियाँ दी गईं। दोनों पुरोहित-पुरोहिता के सन्देश हुए। मोका प्रान्त के पंडित फाकू जी भी आये थे और उनका भी लघु सन्देश हुआ।

शाम के सत्र में काँ इच्ये आर्यसमाज ने अपना योगदान दिया। १४ यजमान के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ। पंडित रामशरण जी और पंडिता देबिया जी मुख्य पुरोहित थे। आर्य सभा के उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी, श्री बालचन्द तानाकूर जी और पंडिता करिमन जी उपस्थित थे। बारी-बारी से सब के सन्देश सुनने को मिले। उस सत्र में ३०२४ आहुतियाँ दी गईं। १६ अप्रैल को सुबह में बोनाकई आर्यसमाज ने अपना योगदान दिया। मुख्य पुरोहित पंडित रामदू जी और पंडिता सत्यभामा जी २० यजमान लेकर पहुँचे । आसन ग्रहणकर यजमानों ने यज्ञ सम्पन्न किया । लघु सन्देश पंडिता दोमन जी और पंडिता लीलकंठ जी के थे, साथ में भजन भी। ४३२० आहुतियाँ दी गईं ।

शाम में ब्रीज़े वेरज्येर आर्यसमाज का सहयोग रहा। माता धनवन्ती जी और पंडिता दोमन जी मुख्य पुरोहिताएँ थीं। माता जी के लघु सन्देश के बाद पंडिता बुझावन जी का भी सन्देश रहा। ग्राम परिषद् की प्रधाना से कुछ विचार सुनने को मिला । भजन भी गाये गये। उस सत्र में ३४५६ आहुतियों से यज्ञ सम्पन्न हुआ।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

मेरी मॉरीशस यात्रा

प्रोफ़ेसर सुद्युम्न आचार्य, भारत

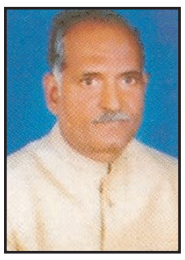

मैं १९ अप्रैल २०१६ को सर्वप्रथम मॉरीशस एयरपोर्ट में उतरा। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी कल्पना साकार हुई। मैं अनेक वर्षों से इस लघु भारत को देखने के लिए उत्सुक था। मैं चाहता था कि मॉरीशस के अपने भाइयों से जो कि आर्यसमाज तथा वेद प्रचार के कार्यों में निरन्तर लगे हैं, उनके दर्शन कर सकूँ। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मॉरीशस के भाइयों की वह ऊर्जा जिससे वे निरन्तर इन कार्यों में लगे हैं, उसे निकट से देख पाऊँ तथा उससे प्रेरणा प्राप्त कर पाऊँ। मुझे सविशेष प्रसन्नता है कि यहाँ आकर मेरी इच्छा पूर्ण हुई।

आर्यसमाज के प्रचार के लिए यहाँ सबसे प्रमुख संस्था 'आर्य सभा' है। इसके अन्तर्गत मॉरीशस की लगभग ४०० आर्यसमाज की संस्थाएँ काम करती हैं। इस छोटे से देश में आर्यसमाज की इतनी संख्या आश्चर्य का विषय है। मैंने देखा कि इन आर्यसमाजों में प्रत्येक रविवार को हवन, भजन, सत्संग होते हैं। इन सभी में प्रत्येक वर्ग के युवा, वृद्ध तथा नर-नारी उत्साह से भाग लेते हैं। यह देखकर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई कि इसमें सभी पुरुष, महिलाओं को वेद मन्त्र कण्ठस्थ हैं तथा वे सभी भक्ति-भाव से मन्त्रपाठ करते हैं।

आर्य सभा के अन्तर्गत अन्य अनेक लोकोपकारी गतिविधियाँ संचालित हैं। इनमें सबसे प्रमुख अनेक स्कूलों कॉलेजों का संचालन है। मैंने देखा कि मॉरीशस के लोग अपने भविष्य के प्रति बहुत चिन्तित रहते हैं। वे अपने बच्चों को रोजगार उन्मुखी (job-oriented) शिक्षा देना चाहते हैं। वे इंग्लिश तथा फ्रेंच भाषा में अपना भविष्य देखते हैं। कोई भी शिक्षण संस्था उनकी इस इच्छा तथा अभिरुचि को ओझल नहीं कर सकती। अतः आर्य सभा के स्कूल कॉलेजों में भी इंग्लिश तथा फ्रेंच के माध्यम से पढ़ाई होती है। सभी पाठ्य-पुस्तकें इन्हीं भाषाओं में है।

ऐसी दशा में आर्य सभा के ऊपर दोहरी ज़िम्मेदारी आ गई है, जिसका वह पूर्ण रूप से निर्वाह का प्रयास कर रही है। इसके स्कूलों में इंग्लिश माध्यम से पढ़ाई की जा रही है तथा इसके साथ ही हिन्दी भाषा को पढ़ाने का भी भरपूर प्रयास किया जा रहा है।

आर्य सभा की शाखाओं के अन्तर्गत उन लोगों के लिये वेद-मन्त्र, प्रार्थना हवन-मन्त्र आदि की पद्धति सिखाने की विशेष व्यवस्था की जाती है, जो इसमें विशेष रुचि रखते हैं। उनके लिए व्याकरण, वेद, उपनिषद् दर्शन आदि की कक्षाएँ संचालित की जाती हैं।

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि इन कार्यक्रमों में महिलाएँ भी पर्याप्त संख्या में भाग ले रही हैं। उन्हें वैदिक सिद्धान्तों में दीक्षित किया जाता है। इन्हें परिवारों के मध्य विविध वैदिक संस्कार कराने के लिए निपुण बनाया जाता है। इन्हें पण्डिता की उपाधि दी जाती है। यह सुखद है कि मॉरीशस में इन्हें स्वीकार किया गया है। यहाँ के लोग बड़ी प्रसन्नता से इन्हें बुलाकर संस्कार सम्पन्न कराते हैं।

यहाँ के आकाशवाणी, दूरदर्शन में भी नियमित रूप से वैदिक वाणी एवं वेद-सुधा के कार्यक्रम संचालित हैं। इसके अन्तर्गत वैदिक प्रवचन, भजन आदि का भी नियमित प्रसारण होता है, जिसे लोग बड़ी प्रसन्नता से सुनते हैं। इन कार्यक्रमों में भी पण्डिताओं के उपदेश होते हैं। इनके द्वारा वेद-मन्त्रों की सरल सुगम व्याख्या से सभी को बहुत प्रसन्नता होती है। यहाँ के साप्ताहिक कार्यक्रमों में भी युवक, महिलाएँ पर्याप्त संख्या में भाग लेते हैं।

अभी शीघ्र ही आर्य सभा द्वारा एक अत्यन्त भव्य गुरुकुल खोला गया है। इसका भवन, कक्षाएँ, खेल का मैदान इत्यादि सभी सुख-सुविधा से परिपूर्ण, नवीन रीति से निर्मित हैं। वास्तव में भारत के लोगों को भी गुरुकुलों के लिए इसका अनुकरण करना चाहिए।

परन्तु इस गुरुकुल के सन्दर्भ में भी समस्या वही है, जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है। इंग्लिश तथा फ्रेंच में पढ़ाई की बहुलता के कारण गुरुकुल के लिए संस्कृत माध्यम से पढ़ने वाले छात्र उपलब्ध नहीं होते। इस विषम परिस्थिति में आर्यसभा ने एक विशेष व्यवस्था की है। इसके लिए छात्रों को स्कूल में अवकाश के दो दिनों – शनिवार, रविवार को आने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। अधिकांश परिवार बच्चों को इन दो दिनों के लिए भेजते हैं। यहाँ वे संध्या, हवन तथा वैदिक सिद्धान्तों का भली प्रकार अध्ययन करते हैं।

इस गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्रों को निवास, भोजन आदि की निःशुल्क व्यवस्था है। परन्तु छात्रों को गुरुकुलीय कार्यक्रमों में भाग लेना पड़ता है। इससे उन्हें इसके महत्त्व भली प्रकार परिज्ञान हो जाता है। इसके अनन्तर ही उन्हें गीत या श्लोक की राग सिखाई जाती है। यह सुखद है कि छात्रगण इसमें बहुत प्रसन्नता से रुचि लेते हैं। वे छन्द, अलंकार को जान लेना चाहते हैं। वे उनके माधुर्य से भी प्रभावित होते हैं।

हमें आशा करनी चाहिये कि आर्य सभा के प्रयासों से भारत-मॉरीशस संस्कृति (Indo-Mauritian Culture) का जो विकास हो रहा है, उसका सर्वत्र स्वागत् किया जाएगा।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

पृष्ठ २ का शेष भाग

रविवार १६ अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। १०८ बार गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ दी गईं। तीन समाजों ने मिलकर भोजन का प्रबन्ध किया था। Grande Retraite, Laventure, और Pont Blanc, आर्यसमाज। एम.बी.सी. सुबह से ही कार्यरत थे। सही समय पर यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। १४ यजमान थे, अर्थात् १५१२ आहुतियों से यज्ञ सम्पन्न किया गया। सभी सत्रों में कुल मिलाकर २४२ यजमानों ने मिलकर गायत्री यज्ञानुष्ठान किया।

यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद धन्यवाद समर्पण किया गया तथा आर्य सभा मॉरिशस के प्रधान का मुख्य सन्देश रहा। सभी दान-दाताओं को धन्यवाद किया गया । जितने लोगों ने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में अपना हाथ बटाया था। सब को धन्यवाद किया गया। पुलिस कर्मयारियों को, दूर और पास से आये हुए सभी भक्त गण को भी। श्री श्याम रामभजन जी को भी ध्वनिवर्धक के लिए धन्यवाद किया गया । माता-बहनों को भी, जिन्होंने सहभोज की व्यवस्था की। विशेष धन्यवाद सभी पुरोहितों, पुरोहिताओं और सभी यजमानों को दिया गया, क्योंकि इन लोगों के बिना यज्ञ पूर्ण नहीं हो पाता। मार लाशो के आर्यसमाज के सभी सदस्यों को और सभी शाखा समाजों को भी धन्यवाद किया गया।

सबसे विशेष धन्यवाद और बधाई माता श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी को जाता है, क्योंकि गायत्री महायज्ञ उनकी प्रेरणा से ही सम्पन्न किया गया । परमात्मा की कृपा से उनका संकल्प पूर्ण हुआ। सन्देशों के दौरान हर बार एक नया विचार सुनने को मिला। हर सत्र में पण्डाल भरा हुआ था। प्रति सुबह में लगभग २०० और शाम को लगभग ३००, कभी इससे ज्यादा संख्या में भक्तों ने अपनी उपस्थिति दी । गायत्री महायज्ञ से सबको लाभ पहुँचा और गायत्री की महिमा चहुँ ओर फैल गई। ***पंडिता प्रेमदा लीलकंठ***

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

सत्यार्थ प्रकाश मास के संदर्भ में निबन्ध प्रतियोगिता

ESSAY COMPETITION

SATYARTHA PRAKASH MONTH (JUNE 2016)

The **Ved Prachaar Samiti** of ***Arya Sabha Mauritius*** is organizing an essay competition in the context of the Satyartha Prakash Month, in (i) Hindi, (ii) English and (iii) French as follows :

CATEGORY	14 - 18 YEARS
Word Count	AROUND 500 Words
Title [Hindi]	सत्यार्थ प्रकाश में निर्धारित शिक्षा पद्धति
Title [English]	Education in the Satyartha Prakash
Title [French]	L'Education selon le Satyarth Prakash

CATEGORY	18 – 25 YEARS
Word Count	AROUND 1000 Words
Title [Hindi]	सत्यार्थ प्रकाश मनुष्य से मानव बनना (मनुर्भवः)
Title [English]	Satyartha Prakash & the making of mankind
Title [French]	La transformation de l'homme en être humain selon le Satyartha Prakash

Submission deadline 25 May 2016

Cash prizes will be awarded for each category & language.

Instruction to participants :

1. Essays should be written / word processed on A-4 paper, recto (one side only).
2. Participants should write their (a) names, (b) date of birth and (c) address, telephone nos. & Email ID) on a separate sheet and sealed in a separate envelope accompanying the submissions. Failure to comply with the instruction would be considered as a nil entry.
3. Envelopes should be marked **ESS-COM/SP/2016** on the top left hand corner.
4. Essays should reach **The Secretary, Ved Prachar Samiti, Arya Sabha Mauritius, 1 Maharishi Dayanand Street, Port Louis** by **Monday 25 May 2016 at 3.30 p.m.,** the latest.

S. Peerthum
Secretary

Satyartha Prakash :

The five tests for TRUTH

(1) The nature, attributes and char acteristics of God, and the teachings of the Vedas.
(2) Eight kinds of evidence such as direct cognition.
(3) The Laws of Nature.
(4) The practice of Aptas.
(5) The purity and conviction of one's own soul.

It behoves all men top sift truth from error with the help of these five test-sand to embrace truth and reject what is not true.

(No.39 of Swamantavyaamantavya Prakash or a statement of my beliefs.)

Maharshi Dayanand Saraswati

Brahmashram Arsha Gurukul

Trois Boutiques Union Vale
(Run by Arya Sabha Mauritius)

Receipt no	Name of Donor	Amount (Rs)
	B/F	30,000
57058	Shri Kamal Nayan Domah	10,000
57059	Shri Devanand Dalmond	200
57060	Arya Gayatri Parivar c/o Pt. Aukhojee	1,850
57061	L'Escalier Arya Samaj	100
57062	Mare La Chaux Arya Samaj	500
57063	Yajman @ Mare La Chaux A.S	300
57064	Yajman @ Mahebourg A.S	700
57065	Yajman @ Planes Wilhems Arya Yuavk/Yuvati Sangh	550
57066	Mahebourg Arya Samaj	500
57067	Yajman @ Mare La Chaux A.S	50
57068	Plaine Wilhems A. Zila Parishad	300
57069	Yajman @ Plaine Magnien A.S.	950
1755	Prof. Soodursun Jugessur	200,000
	Total	**246,000**

(...to be continued)

Kriyātmaka Yoga Series (2)

MAHARSHI PATANJALI'S YOGA DARSHANAM

1.0 Samādhi Pāda

1.01 Atha Yogānushāshanam

It is with due authority *(anushāshanam)* that I (Maharshi Patanjali) start (*atha*) the compilation / codification / description of this Samādhi (*Yoga*) shāstra. Samādhi is communion with God or God-realisation.

This knowledge comes from the one and only revelation, i.e. Vedas and has been transmitted by word-to-mouth process and as such has been expounded through tradition by Vedic seers / sages.

1.02 Yogashchittavritti nirodhah

Yoga is the (*nirodhah*) silencing of (*chitta vritti*) the flux of mental and emotional activities.

The soul (*ātmā*) is the traveller who orders the driver as to the destination to be reached. The physical body is the chariot. The intellect (*mana / chitta*) as the driver decides the direction in line with the order from the traveller. The intellect commands the mind (*buddhi*) which represents the reins that connect the driver and the horses, i.e. the sense organs of perception (*5 jnānendriyan*) and actions (*5 karmendriyan*).

Only a correct order will lead to the appropriate destination. The body, the intellect, the mind, the sense organs are all inert and activated only by the soul.

The silencing of the flux of mental and emotional activities empowers us to be focused on the subject matter of our pursuit: study, work, etc.

1.03 Tadā drashtuh swaroopevasthānam

When (*tadā*) we silence the flux of mental and emotional activities we shall perceive (*drashtu*) our real self as souls (*swaroop avasthānam*) and attain the state to realise / experience the trance of the blissful state of the Almighty.

1.04 Vritti saroopyamitaratra

The soul identifies itself with the mental and emotional state *(vritti saroopyam)* at times other than the state of Yoga (itaratra).

1.05 Vrittayah panchatayah klishtāklishtāh

Mental and emotional activities (*vrittiyah*) yield five types (*panchatayah*) of grief (*klishta*) and happiness (*aklista*).

Those leading to truth, virtue, true knowledge, total commitment in the world yet remain uncoloured by the world (disinterest in things that would cause attachment in most people), benevolence, self and God-realisation yield delight.

Those leading to untruth, vice / immorality, ignorance, selfishness /greed, extravagance / immoderation yield misery.

1.14 Sa tu dirghakālanairantarya satkārasevito dridhabhumi

Such practice (*sa tu*) needs to be over a long time (*dirgha kāla*), constant / regular (*nairantarya*), and total commitment, passion, devotion (*satkār asevitah*).

Success in any field, be it the upbringing of children, sports, studies, research, discoveries and inventions, meditation for self-realisation and God-realisation, etc. are achieved only on the above terms and conditions. These are no new theories; they originate from the Vedas and subsequently encoded by sages.

1.30 Vyādhistyānsanshaya pramādālasyāviratibhrāntidarshan ālabdha bumikatwānvasthettwāni chittavikshepāsteantarāyāh

The obstacles to the silencing of the fluctuating mental and emotional activities are: (a) *Vyādhi* - physical imbalance, sickness …; (b) *Styāna* – playing truant in our practice; (c) *Sanshaya* – doubts; (d) *Pramāda* – irresponsible, unconcerned attitude; (e) *Ālasya* – little or no consideration to put up our utmost efforts to realise our goals; (f) *Avirati* – extravagance, overindulgence in the subject matter of our senses; (g) *Bhrāntidarshan* – contrary knowledge; (h) *Alabdhabhumikatwa* – failure; (i) *Anavasthitatwa* – letting go / absence of any effort to consolidate realisations.

1.31 Dukhadaurmanasyāngamejayatwashwāsprashwāsā vikshepa sahabhuvah

The following are causes that disturbs tranquillity and focus: (a) Dukha – grief; (b) dauramanasya – post-failure irritation; (c) angamejayatwa – shaking of limbs; (d) shwāsa prashwāsa – irregular breathe in and breathe out process.

1.33 Maitreekarunāmuditaupekshānām sukhadukhapunyaapunyavishayānām bhāvanātash chittaprasādanam

The four behavioural patterns are (1) friendship (maitree), (2) compassion / empathy (karunā), (3) contentment (muditā) and (4) indifference (upekshā) to be exercised respectively towards those who are (1) happy, (2) suffering and in need, (3) those who are ethical in thoughts, speech and actions, and (4) cruel and hinder physical, moral / spiritual and social progress.

Apne mana ki shānti ke chābi apne sāth rakhein, dusron ke hāth mein nahin denā

The four behavioural patterns (*sutra 1.33 above*) empowers us to be happy at all times and undisturbed by whatever or however the person in front of us may act and / or react towards us.

Handing the keys of your happiness to others equals to a loss of control ...and either a crash or brutal landing into the gutters. It is best to keep the keys of your quietude with you.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius

Vacoas Arya Samaj

Talk on Ayurveda by Professor B.N. Sinha, eminent Ayurveda & Yoga Practitioner

Ayurvedic Medicine also known as Ayurveda has its source from the Veda. In the series of talks on the importance and benefits of Ayurveda, the Vacoas Arya Samaj had on Sunday 17 April 2016 was graced with the presence of Prof. B.N. Sinha, thanks to Dr. Comalchandra Radhakeesoon from 9:00 to 10:00 am.

Professor B.N. Sinha is a world-renowned Ayurveda and Yoga practitioner. He completed his M.D. and PhD in Kayachikitsa from the Banaras Hindu University. He has been practicing in India for the last 45 years. He also served as Dean Ayurveda at the University of Delhi.

Prof. B.N. Sinha spoke on "Remedy to Lifestyle diseases according to Ayurveda". He expressed concern on some non-communicable diseases affecting the health and daily life of many people, namely diabetes, cholesterol, hypertension and stomach problems. He gave some practical tips and advice on how to prevent these diseases. He emphasized on the need to eat healthy foods, to stay away from fast foods, to allocate enough time for sleep and to have proper personal discipline in life. He answered numerous questions from the audience and shed light on specific issues pertaining to the topic of the day.

Shri Satterdeo Peerthum, General Secretary of the Arya Sabha thanked Prof. B.N. Sinha for his valuable advice. Our eminent guest gifted a copy of his book on Cholesterol to the Arya Sabha Mauritius and a copy to the President of the Vacoas Arya Samaj.

Hemenraj Jaunky
President, Vacoas Arya Samaj

Vikram Samvat and Indian Civilization

Prof. S. Jugessur, Arya Bhushan

It is necessary to highlight some historical facts and some scientific data about our cultural celebrations that have kept the Vedic Sanātan Dharma alive over the last millenniums. Then only can we appreciate the greatness of our 'dharma' and influence the younger generation to follow the paths of our ancestors and not be swept away by the dominant material civilization of the west. The eternal values that are inherent in that culture have to be revived.

Hindu Festivals

Most of our Hindu festivals are often ascribed to Vikram Samvat. Samvat means an era in the Hindu system of time record, and Vikram Samvat is the era starting from the time when Raja Vikramaditya of Ujain conquered the Shaks, an invading tribe, and saved the country from foreign rule. It was 57 years before the Christian era. So this year is 2016 plus 57, or year 2073 in the Vikram samvat.

Raja Vikramaditya, also known as Chandragupta Vikramaditya, was an emperor known for his valor, sense of justice and support to the spread of education. Etymologically Vikramaditya means the Sun of Valor, and he stood by his name by his rule, courage and victory over the Shaks. Many legends have been written around this great historical hero, but we will restrict ourselves to facts.

The Shaks were a warring tribe coming from Bactria, an ancient country having Uzbekistan, Tajikistan and Afghanistan in its fold. They were mostly Eastern Iranians considered as a Malechas tribe along with the Yavanas (Greeks), the Tushanas and the Barbaras. Hordes of such tribes used to invade India from the North-West, one after the other, penetrate through the country, mostly in the Northern region all the way to present day Bihar. On their way, it is said that they invariably destroyed the Hindu literature stored in the libraries that were burnt down. Other invasions followed by the Huns, the Mongols and the Mughals, all availing of the weakness of a people who had forgotten their Vedic culture and adopted evil practices based on conflicting philosophies of life and the spurious caste system. From 1000 AD onwards, with the advent of Islam and the conquest of other Muslim invaders, the situation worsened because of their radical beliefs. They penetrated all the way to South India where the ruler Tipu Sultan is well-known for facing the advancing colonizers.

Until the advent of the British, the area was ruled by petty Maharajas surviving on the principle of divide and rule, already inherent in the lives of the people at that time. The same principle was followed by the British later, but they succeeded in uniting the region under one banner, the British Rajya for their own convenience.

Multi-ethnic origins of Indians

Right at the beginning of this section we have to emphasize that the word Arya or Aryan has no ethnic origins. It includes all peoples who are cultured and have a life based on noble principles, irrespective of their nationality.

Some of the invaders even migrated down South of India and settled, forming the multi-ethnic origin of Indians, as evidenced on genetic studies. The physical appearance of the various inhabitants of India is in itself a fascinating ethnographic study. The three major sub-races of mankind, namely, Negroid, Caucasoid, and Mongoloid, are all visible within the sub-continent. One just has to start from the North-West around Kashmir and Punjab, move further East over Uttar-Pradesh, Bihar and Bengal, and then in the central Madhya-Pradesh and South India, and to a keen observer the different physical traits are blatant. The Caucasoid slowly blends into the Mongoloid and the Negroid.

The Aryavarta civilization

Before the great war of the Mahabharata, probably around 3100 BC as per Vedic Mathematician Aryabhata's calculation, and all the way up to a 1000 AD, the dominance of a Hindu civilization was visible from the Middle East, including Irak, Iran, Afghanistan, through present day Pakistan, India and Bangladesh to Burma, Cambodia, Indonesia and further East. While in the Western region, only excavations of the Indus Valley (now in Pakistan) showing archeological remains of a highly developed urban civilization are visible, we can still see the remains of magnificent temples in Ajanta and Ellora, and further East in Cambodia and other places. These are all evidences of the Aryavarta civilization.

That was the time when Aryan views were prevalent, but with the weakening of the Indian people due to conflicting philosophies based on varied interpretations of Vedic texts, new sects mushroomed, trying to maintain their identities.

It is thanks to the arrival of Swami Dayanand Saraswati and his grammatical interpretation of Vedic mantras that Hinduism revived with a new lease of life. It is the duty of all farsighted people caring for the welfare of all, irrespective of their origins, to keep that flame of nobility (noble character, deeds and attributes) alive.

sjugessur@gmail.com

समाज स्थापना के परिप्रेक्ष्य में

एस. प्रीतम

राजा राम मोहन रोय समाज सुधार की दृष्टि से ब्राह्म समाज १९ वीं शताब्दी के तीसरे दशक के अन्त में स्थापित कर चुके थे। प्रार्थना समाज जो बाह्म समाज की एक शाखा मात्र था वह भी स्थापित हो चुका था। भारत में थियोज़ोफी समाज भी कार्यरत था पर क्या कमी थी कि आर्यसमाज स्थापित करने की ज़रूरत पड़ी थी।

ज़रूरत थी और बड़ी ज़रूरत थी। स्वामी जी वेद का प्रचार करने के लिए निकले थे। सन् १८६३ में गुरु विरजानन्द के आश्रम छोड़कर निकले थे। क्योंकि गुरु ने वचन लिया था कि दयानन्द लुप्त वेद को उजागर करना है और उसका प्रचार करना था।

स्वामी जी कोई नया धर्म स्थापित करना नहीं चाहते थे। भारतवर्ष में मत-मतान्तरों की पहले ही से भरमार थी। हरेक मत दूसरे मत से अपने को बड़ा और श्रेष्ठ मानते थे और आपस में आए दिन भयंकर झगड़ा चलता रहता था। उस झगड़े में पड़कर कोई विशेष प्रगति नहीं हो पा रही थी। बल्कि उल्टे विधर्मी लोग उस झगड़े से फ़ायदा उठा रहे थे। जनता विधर्मी बन रही थी। शुद्धि प्रथा तो थी ही नहीं।

स्वामी जी मात्र खोखली बोली नहीं बोलते। वे जो बोलते थे, करके दिखाना चाहते थे। इस लिए हम देखते हैं आर्यसमाज की स्थापना से पहले सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ लिखा। संस्कार विधि लिखी आर्या विनय नामक पुस्तिका भी लिखी जिनमें वेद की ओर लौटने का सन्देश है।

आर्यसमाज की स्थापना उन लोगों के कहने पर की जिन लोगों में अधिकतर प्रार्थना समाजी थे। उन्हीं लोगों ने स्वामी जी को दिल्ली में निमन्त्रण दिया था। कुछ लोगों ने स्वामी को पश्चिम की ओर आने को कहा था जब उन लोगों ने बनारस में स्वामी जी को शास्त्रार्थ करते देखा था। स्वामी जी ने उन लोगों से कहा था समय आने पर वे ज़रूर आयेंगे।

समाज स्थापना के बाद १८७७ में स्वामी जी ने पूर्व के २८ नियमों को आधार बनाकर १० नियम निर्धारित किये तो सब वैदिक धर्म के प्रचार के लिए ही किया। जैसे वेद किसी जाति विशेष के लिए न होकर प्राणी-मात्र के लिए है वैसे ही आर्यसमाज के दस नियम भी मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए ही हैं।